शोध संचयन

Half yearly, Bilingual (हिन्दी & English)
ISSN 0975 1254
RNI No.- DELBIL/2010/31292

Vol. 4, Issue 1, 15 Jan, 2013

An Internationally Indexed Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

CHIEF EDITOR :
Dr. Yogendra Pratap Singh

EDITOR :
Dr. Sunita Singh

ASSOCIATE EDITORS :

Dr. Pradeep Kumar Rao
Dr. Amit Kumar Dwivedi

www.shodh.net

शोध संचयन

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान पर केन्द्रित अर्द्धवार्षिक शोध जर्नल

Vol. 4, Issue 1, 15 Jan, 2013

प्रकाशकीय कार्यालय :

B-9, द्वितीय तल, गगन अपार्टमेंट,
गगन विहार एक्सटेंशन, दिल्ली, 51
E-mail : shodhsanchayan@gmail.com
info@shodh.net
URL : www.shodh.net

संपादकीय पत्र व्यवहार :

डॉ० सुनीता सिंह, संपादक
409, शांतिवन अपार्टमेन्ट
2A/244A, आजाद नगर कानपुर- 208002
सम्पर्क : +919415050808

SUBSCRIPTION FEE OF JOURNAL

Individual :				
	One Year	ThreeYear	Five Year	Life
Rs.	Not Available	800	1400	3000
US$	15	30	60	200

Institutional :				
	One Year	ThreeYear	Five Year	Life
Rs.	400	1100	1800	4000
US$	25	50	100	300

Bank Draft or Crossed Cheque (CBSB Branches for out station cheque) accepted in Favour of "**Shodh Sanchyan**" payable at **Kanpur**. Overseas subscribers can subscribe by electronic transfer. For detail visit **www.shodh.net.**

*Subscription fee may be revised according to Editorial Board Decision.

मूल्य : रु0 150/-

नोट : प्रकाशित आलेखों के विचारों से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्त वाद क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ0 सुनीता सिंह द्वारा शिवा प्रिंटिंग वर्क्स, A-21/11 नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-II नई दिल्ली, 98 से मुद्रित कराकर B-9, द्वितीय तल, गगन अपार्टमेंट, गगन बिहार एक्सटेंसन, दिल्ली–51 से प्रकाशित

लेखकों से अनुरोध

शोध संचयन सामाजिक विषय एवं मानविकी का अर्द्धवार्षिक शोध-जर्नल है जिसमें उपरोक्त विषयों से संबंधित सभी उपविषयों के मौलिक शोध-पत्र, शोध समीक्षा, विचार, लेखों आदि का प्रकाशन किया जाता है। शोधकर्ता हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में अपने शोध पत्र भेज सकते हैं।

शोध पत्र भेजते समय कृपया निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें:-

1. शोध-पत्र अधिकतम 4000-5000 शब्दों तक में हो तथा 150 शब्दों का सार संक्षेप एवं विषय संकेतक (Key Words)भी प्रेषित करें।
2. संदर्भ ग्रन्थ सूची का उल्लेख अवश्य करें। संदर्भ ग्रन्थ सूची में लेखक का उपनाम, मुख्य नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशन का वर्ष एवं पृष्ठ संख्या अंकित होना चाहिए। पत्रिका के संदर्भ में लेख का शीर्षक, पत्रिका का नाम, अंक, पृष्ठ क्रम एवं प्रकाशन वर्ष दें।
3. शोध-पत्र A4 साइज के कागज पर कम्प्यूटर से एक तरफ मुद्रित हो।
4. शोध-पत्र एम.एस. वर्ड अथवा पेज-मेकर पर हिन्दी में Krutidev 10 के Font size 12 तथा अंग्रेजी में Times New Roman में Font size 10 में टाइप करवाकर भेजें।
5. ई-मेल द्वारा प्रपत्र भेजने पर भी आलेख **तीन प्रतियों में (Hard Copy)** तथा **सीडी में** अवश्य भेजें। जिससे प्रूफ रीडिंग सम्बन्धी कमियों को दूर किया जा सके।
6. शोध-पत्रों की स्वीकृति एवं अस्वीकृति का अन्तिम निर्णय सम्बन्धित विषय के दो विशेषज्ञों की राय से सम्पादक मण्डल द्वारा किया जाता है। इस सम्बन्ध में अन्तिम अधिकार प्रधान सम्पादक को प्राप्त है जो सभी सदस्यों को मान्य होगा।
7. शोध-पत्र के प्रकाशन हेतु सम्पादक के नाम पत्र होना चाहिए, जिसमें स्पष्ट रूप से शोध-पत्र के सम्बन्ध में ''मौलिक एवं अप्रकाशित'' शब्द लिखा होना चाहिए और उसे अन्यत्र न भेजे जाने की पुष्टि हो। www.shodh.net से सर्टिफिकेशन ऑफ ओरिजिनलिटी प्राप्त करें या पृष्ठ 127 से लें और लेख के साथ भरकर भेजें।
8. शोध-पत्र में सारणी एवं चित्रों का प्रयोग लेख के बीच में न करते हुए अंत में संदर्भ या संलग्नक के रूप में करें।
9. शोध-पत्र ई-मेल द्वारा हमारे ई-मेल पते पर और डाक द्वारा निम्न पते पर भेजे जा सकते हैं -

shodhsanchayan@gmail.com
info@shodh.net
डॉ० सुनीता सिंह, संपादक शोध संचयन,
409, शान्तिवन अपार्टमेंट
2A/244A आजाद नगर, कानपुर-208002 (उ०प्र०)

अपने आलेख को लिखते समय कृपया ध्यान दें:-
(शोध आलेख में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ)

1. आलेख में नई एवं मौलिक उद्भावनाओं/अवधरणा के प्रतिपादन का अभाव एवं पूर्व स्थापित अवधरणा/मान्यता, स्थापना आदि का पिष्टपेषण।
2. शोध आलेख का तार्किक एवं श्रृंखलाबद्ध न होना और शब्दजाल की अनावश्यक उपस्थिति।
3. संदर्भ साहित्य का अपर्याप्त अध्ययन।
4. त्रुटिपूर्ण तथ्यों एवं आँकड़ों का उल्लेख।
5. पाठ में उल्लिखित संदर्भ का लेख के अन्त में दी गयी संदर्भ सूची में न लिखा जाना।
6. संदर्भ में पुस्तक के संस्करण का न लिखा जाना।
7. पाठ में व्याकरणिक त्रुटियों का होना।
9. वाक्य में काल का असंगत होना।
10. प्रस्तुति में असंगत्ता।
11. लेखक के द्वारा आलेख शुद्ध करते समय शब्द/पद/वाक्य का लोप हो जाना।
12. लेख का अपेक्षाकृत बड़ा हो जाना।
13. विषय प्रतिपादन में विषय का अस्पष्ट होना।
14. तथ्यों, भावों या विचारों की पुनरावृत्ति।

Abstract:-

The researchers must give Abstract of their papersèkArticles. It must be concise, clear and perfect in itself and should not be the repetition of paragraphs given research papers.

शोध सारांश :-

अनुसंधाता द्वारा अपने शोध पत्र/शोध आलेख को आलेख सार (Research Article Abstract) अधिकतम 150 शब्दों में अवश्य दिया जाये। आलेख सार बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाये कि वह अपने आप में संक्षिप्त, स्पष्ट एवं पूर्ण हो तथा मूल शोध आलेख के अनुच्छेदों की पुनरावृत्ति न हो।

Key Words :-

Keywords of research paper/article must be given at the beginning of the paper. It should be be in more than 5 word.

विषय संकेत :-

शोध पत्र/लेख के विषय का सम्पूर्ण परिचय प्रस्तुत करने वाले शब्दों को अवश्य दें। इनकी संख्या पाँच से अधिक नही होनी चाहिए।

Be Research Journalist

Be a Research Journalist and join us. Send research based News, information, reports and photographs of Seminars etc.

Research flourishes through publication & efficient academic networking.

PATRON :

Dr. Nagendra Swaroop, *D. Litt., Secretary, Board of Management, Dayanand Shiksha Sansthan, Kanpur*

Prof. Ram Achal Singh, *Ex. V.C., R.M.L.A. Univ., Faizabad, Ex. Chairman, UPHESC, Allahabad*

Prof. Narendra Kohali, *Eminent Hindi Writer, Delhi*

Prof. Achutanand Mishra, *V.C.,M.L.C.Patakarita Vishwavidyalaya, Bhopal*

Prof. Gyanendra Singh, Ex.V.C., *M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakoot, Satana*

Prof. K.B. Pandey, *V.C., M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakoot, Satana,Ex. Chairman, UPPSC, Allahabad, Ex. V.C.,C.S.J.M. Univ., Kanpur*

Prof. A.D.N. Bajpai, *Ex.V.C.,A.P.S. University, Rewa., Ex.V.C., M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakoot, Satana*

Dr. P.V.Shrikrishan Bhatt, *Ex. Principal & Member of Peear's Committee, NAAC, Banglore*

Sri. Suresh Chandra Shukla, *Editor,'Spial', Norway*

Sri. R.P. Goel, *Ex. Adv. Gen., U.P. Govt., Allahabad*

EDITORIAL ADVISORY BOARD :

Prof. Dasharath Dwivedi, *Ex. HOD, Sanskrit, D.D.U.G. University, Gorakhpur*

Prof. Surendra Dubey, *HOD, Hindi, D.D.U.G. University, Gorakhpur*

Prof. Sadanand Prasad Gupta, *Editor, 'Samanwaya', Gorakhpur*

Prof. Shanti Shri Pandit, *Dept. of Politics & Public Administration University of Pune, Pune*

Prof. R.C. Sinha, *Retd. Prof & Head, Dept. of Philosophy, Patna University, Patna*

Prof. Y.P. Singh, *Ex. HOD, Hindi. Alld. University, Allahabad*

Prof. N.N. Pandey, *Ex. Director, Kendriya Hindi Sansthan, Agara,Education, Assam Univ.Silture*

Prof. Rakesh Mishra, *Dept. of Buddhist Studies, University of Jammu, Jammu*

Prof. Geeta Sharma, *Lal Bahadur Shastri Administrative Academy, Mussoorie, Ex. Visiting Prof., Osaka University, Japan*

Prof. Shushma Yadav, *Prof. of Ambedkar Chair, Indian Institute of Public Administration, New Delhi*

Prof. Bhagwat Singh, *Ex. Principal, Hari Ram Degree College, Mairwa, Dist. Siwan (Bihar)*

Prof. Haribhakt Neopani, *Eminent Writer, Tribhuwan University, Kathmandoo, Nepal*

Dr. Ajai Prakash, *Ex. HOD, Hindi, D.A-V. College, Kanpur*

Prof. Nand Kishore Pandey, *Prof.,Dept. of Hindi, Rajasthan Univ., Jaipur*

Dr. Lalit Singh, *Dept. of Humanities, Registrar, M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakot, Satana*

CHIEF EDITOR :

Dr. Yogendra Pratap Singh
Dept. of Hindi, D.A-V. College, Kanpur

EDITOR :

Dr. Sunita Singh
Dept. of M.Ed., V.S.S.D. College, Kanpur

NEWS EDITOR :

Dr. Ramesh Verma, *Senior Journalist, Dept. of Hindi, D.A-V. College, Kanpur*

EXECUTIVE EDITOR :

Dr. Tribhuwan Singh, *Principal, B.A.D. College, Ballia*

Dr. Bipin Chandra Kaushik, *Dept. of Pol. Science, D.B.S. College, Kanpur*

ABSTRACT EDITOR :

Dr. Raj Saran Shahi, *Dept. of Education, Budha P.G. College, Kushinagar*

ASSOCIATE EDITOR :

Dr. Pradeep Kumar Rao, *Principal, M.P. Degree College, Gorakhpur*

Dr. Amit Kumar Dwivedi, *Entrepreneurship Development Institute of India(EDII), Ghandi Nagar, Gujrat, Ex. Fellow, IIM, Ahmadabad*

HINDI LANGUAGE EDITOR :

Dr. Siddhartha Shankar, *Hindi, J.P. University, Chapara, Bihar*

ENGLISH LANGUAGE EDITOR :

Dr. Suman Singh, *Dept. of English, P.P.N. College, Kanpur*

TRANSLATION EDITOR :

Dr. Rajendra Prasad Pandey, *Dept. of Translation Studies, I.G.N.O.U., Dehli*

CONVENER & CO-CONV. REVIEW COMMITTEE :

Dr. Arun Kumar Singh, *Dept. of Philosphy, D.A-V. College, Kanpur*

COUNCIL OF EDITORS :

Dr. N.D. Dwivedi, *Dept. of Extension Education, M.J.P.R. Univ., Bareilly*

Dr. Ram Chandra, *Dept. of Hindi, J.N.U., Delhi*

Dr. A.K.Singh, *Head., Institute of J & M.C., C.S.J.M. Univ., Kanpur*

Dr. Ravi Shankar, *Dept. of Geography, B.H.U., Varanasi*

Dr. Kusum Singh, *Dept. of Humanities, M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakot, Satna*

Dr. Jacob Kurion, *Visiting Professor of Economics at Rockhurst University, Kansas City, U.S.A.*

Dr. Shamim Ahmad, *Department of Education, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad*

Dr. G.L.Srivastava, *Principal, Armapore Degree College, Kanpur*

Dr. Jai Veer Singh, *R.M.L., P.G., College, Sitapur*

Dr. **Pawan Agrawal,** *Dept. of Hindi, Lucknow Univ., Lucknow*
Dr. **Sanjay Singh,** *Department of History, K.N. Govt. P.G. College, Gyanpur, Bhadhohi*
Dr. **Niranjan Barnwal,** *Centre for South East Asian Language Study , California University, California, U.S.A.*
Dr. **Kashi Nath Neopani,** *H.O.D., Budha Philosophy, Valmiki Campus, M.S.Viswavidyalaya, Kathmandu, Nepal*
Dr. **Nityanand Srivastava,** *Dept. of Hindi,C.G.N.P.G. College, GolaGokaran, Lakhimpur*
Dr. **Krishna Kanti Dixit,** *Dept. of Hindi, D.A-V College, Kanpur*
Dr. **Aneeta,** *Dept. of P.G. Hindi, JP Uni. Chapara*
Dr. **Vibha Singh,** *Dept. of Hindi, D.A-V College, Kanpur*
Dr. **Mahesh Diwakar,** *President, Akhil Bhartiya Sahitya Kala Manch, Mooradabad*
Dr. **Gayatri Singh,** *HOD., Hindi, Armapore Degree College, Kanpur*
Dr. **N. Papa Rao,** *K.P.G. College, Bhilai, Durg, Chattisgarh*
Dr. **Ajai Bhupendra Jaiswal,** *Dept. of Law, V.S.S.D. College, Kanpur*
Dr. **Anoop Kumar Singh,** *Sociology, D.A-V., College, Kanpur*
Dr. **Raj Narayan Shukla,** *Dept. of Hindi, S.D.P.G. College, Ghaziabad*
Dr. **Hardeep Singh Negi,** *H.O.D. Hindi, S.C.D., Govt. P.G. College, Ludhiyana*

ASISTANT EDITOR :

Dr. Raj Shree Chaturvedi
Dept of Pol. Science., D.A-V.College, Kanpur
Dr. Jyoti Yadav
Dept of English, K.M. Govt. College, Ghaziabad
Vikash Mishra
Department of B.Ed.,Akabarpur Degree College, Kanpur Dehat
Sarveswar Ram Mishra
Dept. of History, D.A-V. College, Kanpur
Vishakha Pandurang Mhaske
Lect., B.Ed. & M.Ed. College of Education, Shri Sharda Bhavan Education Society Nanded (Maharastra)

Publication Office-in-charge :
Suraj Singh, *New Delhi*

Editorial Staff: ***Dinesh Kumar Yadav***

LEGAL CELL :

Manish Goyal, *Advocate, Allahabad*
Sanjai Singh Bisen, *Advocate, S.C., New Delhi*
K.K.Singh, *Advocate, H.C., Allahabad*
Ratneswar Pandey, *Advocate, H.C., New Delhi*

ACKNOWLEDGEMENT :

Dr. Rekha Sharma
Principal, D.A-V. College, Kanpur
Sri A. K. Yadav
Asst. Commisnor, Income Tax, New Delhi

सभी सम्पादकीय दायित्त्व पूर्णतः अवैतनिक है।

Special Issue
- विशेष अंक -

Indian Literature & Modern Discipline

भारतीय वाङ्मय और आधुनिक ज्ञानानुशासन

भारतीय वाङ्मय में आधुनिक ज्ञानानुशासनों के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं। अमरकोश आधुनिक थिसारस का पूर्वज है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र दुनिया का प्राचीनतम मीडिया का शास्त्र है। चाणक्य का अर्थशास्त्र राजनीतिविज्ञान का आधारभूत ग्रंथ है। .... आदि ऐसे अनेक प्रसंग हैं जिनका संबंध आधुनिक ज्ञानानुशासन से है। आधुनिक संदर्भों में भारतीय वाङ्मय पर आधरित शोध आलेख आमंत्रित हैं।

Information Technology & Modern Discipline

सूचना प्रौद्योगिकी और आधुनिक ज्ञानानुशासन

सम्प्रति सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी और मीडिया की उपस्थिति से विश्व व्यवस्था में आमूल परिवर्तन घटित हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी ने न केवल व्यवस्था को बदला है वरन् विचार और दृष्टि को भी बदला है। इस नवीन क्रांति के हस्तक्षेप से शैक्षिक अनुशासनों में अभूतपूर्व बदलाव आए हैं। इस क्रांति से विभिन्न शैक्षिक अनुशासनों में आने वाले बदलावों को रेखांकित करने वाले सूचना प्रौद्योगिकी एवं विभिन्न विषयों के अन्तरानुशासनात्मक मौलिक शोध आलेख आमंत्रित हैं।

शोध अभिमत

आपकी पत्रिका शोध संचयन नियमित पढ़ती हूँ। यह नेट पर www.shodh.net पते पर उपलब्ध है। नेट पर शोध संचयन के उपलब्ध होने से हम विदेश में रहने वाले आसानी से आई पोड और इंटरनेट पर पढ़ते हैं। शोध संचयन देश-विदेश के शोध-साहित्य के महत्वपूर्ण पत्रिका है। जो दिन पर दिन निखर रही है।

भविष्य में यह पत्रिका और तरक्की करे यह कामना है।

- माया भारती
Grevilingveien 2G
0959 Oslo
Norway
mayabharti@gmail.com

आज हिन्दी में शोध पत्रिकाओं की बहुत कमी है। वेब पर कई पत्रिकाएँ प्रकाशित मिलती हैं। इन वेब पत्रिकाओं में मौलिक शोध पत्रों की कमी खलती है। शोध संचयन को पढ़ा, मुझे बहुत अच्छी लगी। शोध संचयन में प्रकाशित लेख और शोध सामग्री प्रेरणास्पद है। शोध पर अनेक लेखों के अलावा वेब साइट में सेमिनार/कार्यशाला और अन्य सूचनाओं की समय-समय पर उपलब्धता सुखद है। यहाँ नार्वे में हम हिंदी स्कूल चलाते हैं। वेब पर हिंदी में इस प्रकार की अच्छी सामग्री देखकर हमें सुखद अनुभव होता है। शोध संचयन और उसकी पूरी टीम को मैं शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

संगीता शुक्ल सीमोनसेन
प्रधानाचार्य, हिंदी स्कूल
ओस्लो, नार्वे

'शोध संचयन' बेहद स्तरीय, रोचक, ज्ञानवर्धक शोध पत्रिका है। इस जर्नल में छपे शोध आलेखों में विषयों की विविधता ध्यान अपनी ओर खींचती है। सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के विषयों पर केन्द्रित यह अंतरराष्ट्रीय शोध जर्नल विभिन्न विषयों के शोधार्थियों को एक मंच प्रदान करता है, जहाँ से कोई भी शोधार्थी विषय से संबन्धित अपनी बाधाओं को दूर कर सकता है । सामयिक मुद्दों से जुड़े शोध आलेख व शोध पत्र जर्नल की गुणवत्ता को प्रतिबिंबित करते हैं । जर्नल में दलित विमर्श, सामाजिक सरोकारीय मुद्दे व स्त्री चेतना से जुड़े विभिन्न अध्येताओं के शोध आलेख बहुत ही उत्कृष्ट एवं जानकारीयुक्त हैं। शोध जर्नल विभिन्न शोध लेखों के माध्यम से लोगों को शोधा के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। संपादकीय बेहद ही ज्ञानवर्धक व जानकारीपरक होता है।

एक अच्छी शोध पत्रिका के लिए संपादक मंडल को धन्यवाद !

रामशंकर
शोधार्थी-पीएच.डी. जनसंचार
महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
वर्धा, महाराष्ट्र

The last issue of of Shodh Sanchayan was very topical, relevant and exploring. This journal is improving day by day and ready to match and compete with other peer journals in the Humanities and Social Science Research. The plurality displayed in the selection of articles and papers by the editorial board deserves kudos. I hope and believe this journal will further improve and make its presence felt globally among the academics.

Dr Gopal Singh
Associate Professor & Ex Head
Dept of Mass Communication & Journalism
B B Ambedkar Central University
Lucknow

An Honest warning for Author/ Research Contributor

The writing of research papers has become a very common phenomenon in academic world. This is being done without giving due care to the norms and ethics accepted for writing research papers. Even a small mistake may embrace and malign the image of anyone. Several stories are regularly imersing about the violation of accepted norms. With the help of Electronic Editing it is very common to cut, copy and paste in Research article/ thesis formation without refering them. We should always keep in mind that it is not a fare prctice. In review process, sometimes we copes such situations. This type of stories suggest that author/ research contributor must be very honest and sincere in their work and must give proper attribution in case they are quoting any content from any place.

Editor

सम्पादकीय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पहल पर विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों द्वारा किए जा रहे शोध संगोष्ठियों एवं शोध प्रकाश की प्राथमिकताओं से उच्चशिक्षा में शोध के प्रति उत्साहजनक और सकरात्मक प्रयास शुरू हुए हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारत में विकास के कार्यों में लगाने के किए मानव संसाधान की व्यापक आवश्यकता महसूस की गयी फलत: देश में शिक्षा विभाग को मानव संसाधन विभाग के अंतर्गत रखा-गया। स्वतंत्र भारत की प्राथमिकता अशिक्षा से मुक्ति हेतु व्यापक अभियान चलाकर जनता को शिक्षित करने की थी और इसके साथ भारत में राज्य के समक्ष महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी विकास की थी। विकास के लिए जनता का मन बनाना और इसकी आवश्यकता के अनुसार मानव संसाधन का निर्माण करना, देश के विकास की पूर्वापेक्षा थी। परिणामस्वरूप देश में व्यावसायिक शिक्षा का चलन शुरू हुआ, रोजगारपरक शिक्षा के नये-नये पाठ्यक्रम आविष्कृत हुए और चिकित्सा एवं आभियान्त्रिकी की नयी-नयी शाखाओं का प्रार्दुभाव हुआ। इस लक्ष्योदेश्य को फलीभूत करने में प्राकृतिक विज्ञान के विषयों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। विकास और विज्ञान के पारस्परिक सहयोग से निर्मित इस नए माहौल में मानविकी एवं समाज विज्ञान के विषयों की उपेक्षा स्वाभाविक थी। यद्यपि अपनी महत्ता प्रतिपादित करने के होड़ में इन विषयों में अधिकांश ने अपनी विज्ञान से परस्परिकता का सूत्र ढूढ़ना प्रारम्भ किया। यह एक सामान्य प्रश्न लगभग सभी शैक्षिक अनुशासनों में प्रारंभ हुआ कि वह कला है या विज्ञान। इन शैक्षिक विषयों में विज्ञान और विज्ञानेतर विषयों का विभाजन सामान्य हुआ। अगले चरणों में भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक अन्य विभाजन रोजगारपरकता को लेकर हुआ। सम्प्रति उच्च शिक्षा में एक विभाजन स्पष्ट दिखता है, एक तरफ पारंपरिक विषयों की शिक्षा है तो दूसरी ओर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की शिक्षा है। पारंपरिक विषयों की महत्ता शिक्षा के मौलिक चिंतन एवं मौलिक शोध (Fundamental Research) की दृष्टि से है, वहीं दूसरी ओर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की शिक्षा में मानव संसाधन का सृजन, रोजगार एवं अनुप्रयुक्त शोध (Applied Research) का महत्त्व है। पूर्व में शिक्षा व्यवस्था का दायित्व केवल शिक्षा प्रदान करना था। इस समय उच्च शिक्षा संस्थान एवं विश्वविद्यालयों पर शोध कार्य को आगे बढ़ाने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी आ चुकी है।

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की ओर एक बड़े वर्ग के आकर्षण के कारण सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के विषयों के प्रति उपेक्षा की भावना महसूस की जा रही थी। इधर के वर्षों में भारतीय विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की उपस्थिति एक बड़ी चिंता का विषय रहा है। इससे अध्यापक वर्ग के लिए अपने उत्तरदायित्व एवं प्रतिभा को निष्पादित(Perform) करने का अवसर दुर्लभ होने लगा। दूसरी ओर विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के गैर रचनात्मक उपस्थिति का दबाव एक प्रकार से कुंठा का वातारण निर्मित करने लगा। मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों की उपादेयता उन अर्थों में नहीं है जैसा कि व्यावसायिक विषयों का है। अतएव मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के विषय समाज में उपेक्षित होने लगे और शासन का भी ध्यान इन विषयों और उच्चशिक्षा से हटने लगा। प्राय: यह चर्चा सत्ता के गलियारे में आम हो गयी कि उच्च शिक्षा पर व्यय अनुत्पादक है। नागरिकता की समझ, उच्च जीवन मूल्य एवं मनुष्य के सर्वांगीण उन्नति के लिए इन विषयों की अपरिहार्यता असंदिग्ध है। शोध के संदर्भ में यह महत्त्वपूर्ण है कि मौलिक शोध वस्तुत: मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों की मुख्य धारा से जुड़े हैं। प्राकृतिक विज्ञान के अनुप्रयुक्त शोध से चाहे हम जितनी भी भौतिक प्रगति कर लें और मानविकीय सामाजिक विज्ञानों के अनुप्रयुक्त शोधों, सर्वेक्षणों से चाहे हम जितनी भी प्रबन्धकीय कुशलताओं एवं सफलताओं को प्राप्त कर लें, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के मौलिक शोधों का महत्त्व यथावत् बना रहेगा।

सूचना प्रौद्योगिकी एवं वैश्वीकरण ने दुनिया के ज्ञान तंत्र का लोकतांत्रीकरण कर दिया अब सभी भाषाओं एवं देश में बद्ध ज्ञान सर्वसुलभ हो गया है। सभी भाषाओं का साहित्य देश-काल से परे जाकर विश्व साहित्य बनना चाहता है। चारो तरफ आज ज्ञान के क्षितिज पर उन बातों की चर्चा है जो विश्व साहित्य की संकल्पना को बल दे सकता है। दुनिया के समग्र भाषाओं में आबद्ध ज्ञान अब सार्वदेशिक सामान्य ज्ञान बनना चाहता है। ज्ञान की इस साझेदारी में अन्तरनुशासनात्मक शोध का महत्त्व नि:संदेह बढ़ा है। बिना शोध के हम विश्व साहित्य के निर्माण में अपना योगदान नहीं कर सकते हैं। अब देश-विदेश के भाषा साहित्य एवं वाङ्गमय की सीमा महत्त्वपूर्ण नहीं रही। सम्प्रति पत्र-पत्रिकाओं एवं संगोष्ठियों से ऐसा सकारात्मक वातावरण निर्मित हुआ है। अत: आवश्यकता है कि अपनी भाषा साहित्य और वाङ्गमय में उच्च मौलिक शोधों से विश्व साहित्य में अहम् उपस्थिति दर्ज की जाये। अनुवाद और शोध, दो ऐसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं, जिनमें मौलिक योगदान के माध्यम से भारतीय भाषा-साहित्य एवं वाङ्गमय की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों को पूरी दुनिया में विस्तारित किया जा सकता है तथा वैश्विक अनुभवों से इनको जोड़ते हुए विश्व साहित्य में भारतीय भाषा-साहित्य एवं ज्ञान की महत्ता को प्रतिपादित किया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी जनित सुविधाओं ने एक तरफ हमारे ज्ञान का सूचनात्मक विस्तार किया है तो दूसरी ओर इन सूचनाओं के प्रसंस्करण से नवीन तथ्यों को अन्वेषित करने में हमें समर्थ बनाया है। सामाजिक-मानविकीय शोधों के लिए इससे व्यापक संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त हुआ है। नवीन परिस्थिति को समझते हुए, सूचना प्रौद्योगिकी के नवाचारों (New Innovations)को अपनाते हुए एक तरफ हमें अपने ज्ञान तंत्र की खिड़की को खुला रखना होगा और दूसरी तरफ बाहर से आने वाली हवाओं के प्रति सचेत और सतर्क रहना होगा जिससे नव्यतम अवधारणायें और तथ्य समाज की प्रबुद्ध चेतना को प्रौढ़ करते हुए मानवीय चेतना का विकास कर सके।

- डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह

(प्रधान सेपादक)

शोध संचयन

Vol. 4, Issue 1, 15 Jan, 2013

अनुक्रम

पृष्ठ

लेखकों के लिए निर्देश .....(III)
शोध अभिमत .....(VI)
सम्पादकीय .....(VII)

शोध आलेख

वैज्ञानिक शोध की प्राचीन भारतीय परम्परा
प्रो० कृष्ण बिहारी पाण्डेय
.....पृष्ठ *10*

समावेशी विकास एवं क्षेत्रीय विषमता : भारतीय सन्दर्भ
डॉ० अजीत कुमार तिवारी
.....पृष्ठ *20*

उत्तर आधुनिक साहित्य के दलित सन्दर्भ
डॉ० रश्मि चतुर्वेदी
.....पृष्ठ *33*

सांस्कृतिक वर्चस्ववाद और मिथिला की महिलाएँ (कुछ प्रथाओं के संदर्भ में)
चित्रलेखा अंशु
.....पृष्ठ *40*

मध्य प्रदेश से प्राप्त प्राचीन मूर्तिशिल्प में श्रृंगार एवं शांत रस
डॉ० अमिता खेर
.....पृष्ठ *49*

नागपुर भूकंप आपदा प्रबंधनः पुनर्वसन और विकास का अध्ययन
शैलेन्द्र कुमार वर्मा
.....पृष्ठ *56*

Research Article

A Study of Comments in On-line Newspapers
Arvind Kumar Singh
..... *Page-14*

Doctor-Patient Relationship : A Socio-legal Analysis
Dr. Ajay Bhupendra Jaiswal & Dr. A. S. Bahatnagar
..... *Page-26*

Alternative Modernities: Consequences of Cultural Change in Pre-Colonial India
Dr. Rajesh Kumar Nayak
..... *Page-36*

Web-Based Education: Perceptions of Teacher-Trainees Regarding OER's
Shamim Ahmad
..... *Page-53*

The Issues of Belonging and Identity : A critique of Naipaul's half a life and The Magic Seeds
Dr. Sadhana Chaturvedi
..... *Page-60*

The Element of Love and Beauty in Spenser's Creation
Dr. Priyank Singh
..... *Page-67*

वैवाहिक एवं पारिवारिक मूल्यों पर व्यावसायिक शिक्षा का प्रभाव
डॉ० उपासना एवं डॉ० किरन डंगवाल
.....पृष्ठ *63*

कबीर काव्य में स्त्री का स्वरूप
डॉ० श्रीमती सुमन
.....पृष्ठ *72*

नासिरा शर्मा कृत 'कुइयाँजान' में जलीय चेतना
डॉ० सुनील कुमार'एवं सुश्री सविता
.....पृष्ठ *80*

खीरों ग्राम (बैसवारा क्षेत्र) का विलक्षण चित्रित मंदिर: बलभद्रेश्वर
डॉ० प्रेम कुमारी श्रीवास्तव'
.....पृष्ठ *90*

शोधगतिविधियाँ

इलेक्ट्रानिक मीडिया मनुष्य की शारीरिक क्षमताओं का विस्तार है-प्रो० बी०के० कुठियाला
रश्मि गौतम
....पृष्ठ *99*

प्रकाशन

मैत्रेयी पुष्पा स्त्री अस्मिता के महासमर में संघर्ष करने वाली महान योद्धा हैं।
डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह
....पृष्ठ *101*

A Study of the Social Status of Arts and Science Higher Secondary Teachers and Their Attitudes Towards Teaching Profession
Dr.(Mrs.)Hema Dwivedi
..... *Page-76*

Research Methodology : An Overview
Archana Singh
..... *Page-86*

Indian Economic Structure-: A View Point
Dr. V. K. Goswami
..... *Page-93*

Seminar/Workshop
..... *Page-85*

Call for Cases
..... *Page-13*

Certification of Original Work
..... *Page-103*

Subscription Form
..... *Page-104*

* * *